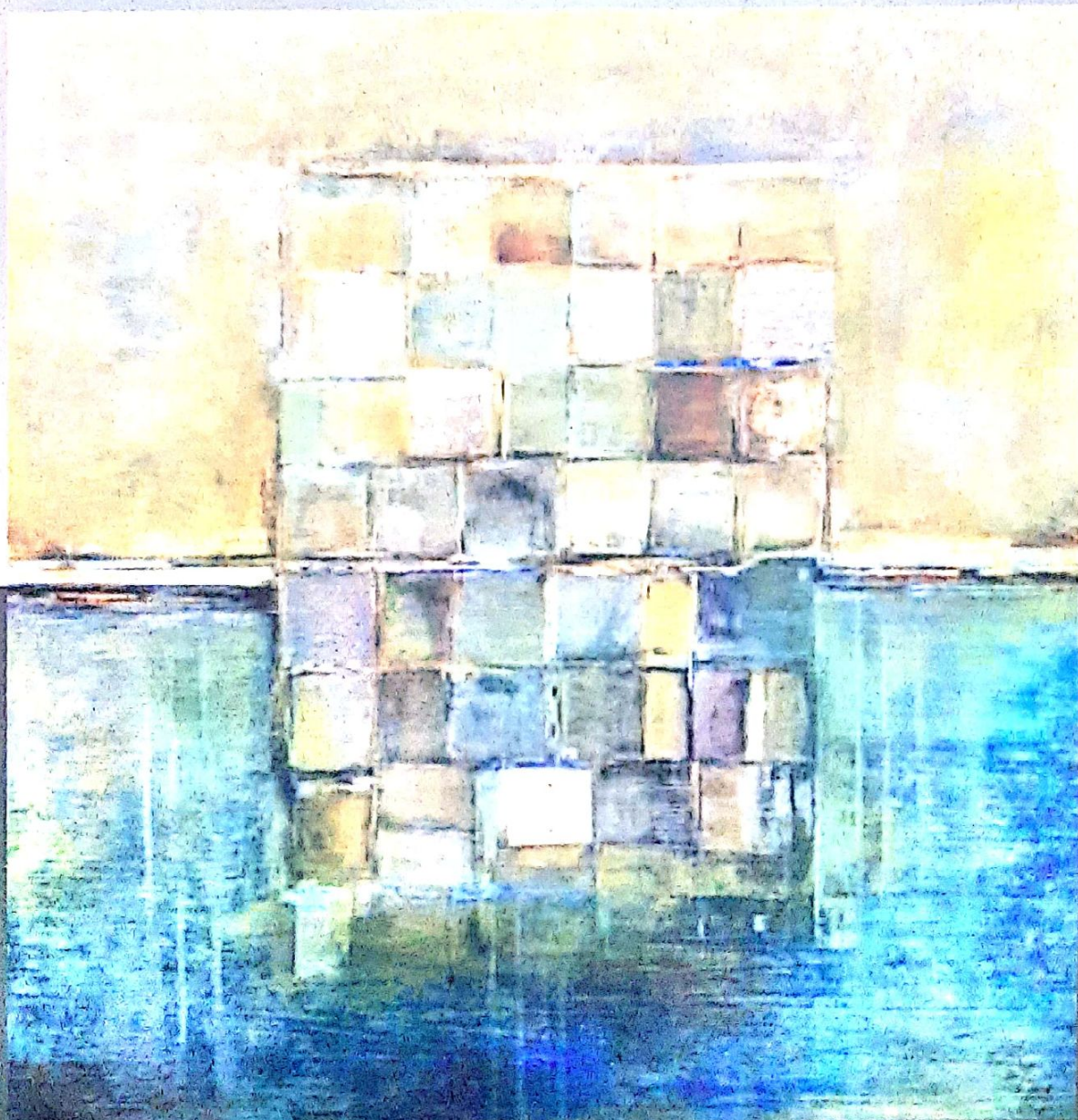


भाग
1

भारतीय भाषा साहित्य

(विविध संदर्भ)



संपादक
डॉ. राजेन्द्र यादव

ISBN : 978-93-81480-98-4

प्रकाशक : विजया बुक्स

1/10753 सुभाष पार्क, गली नं. 3

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

फोन : 011-22822514; 9910189445

Email : vijyabooks@gmail.com

rajeev02sharma@gmail.com

© : लेखक

प्रथम संस्करण : 2016

मूल्य : 650/-

मुद्रक : विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

विषय सूची

संपादकीय	5
1. स्त्री संदर्भ और भक्ति कालीन हिन्दी कविता	11
प्रो. चन्दा बैन	
2. भारतीय साहित्य की भूमिका	24
डॉ. राजेन्द्र यादव	
3. कफन कहानी को अंग्रेजी हिंदी पाठ :	
एक तुलनात्मक अध्ययन	32
डॉ. विवेकानंद उपाध्याय	
4. उत्तर राम प्रसंग : एक तुलनात्मक अध्ययन	40
डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र	
5. पराजित होते सम्बन्ध और हिन्दी उपन्यास	54
डॉ. हिमांशु कुमार	
6. समकालीन आदिवासी कविता	59
डॉ. मनीष कुमार	
7. दलित साहित्य में अस्मिता की अवधारणा	71
डॉ. अरविन्द कुमार	
8. शिक्षा में मूल्यांकन की अवधारणा	82
डॉ. अरविन्द कुमार गौतम	
9. छायावाद और जयशंकर प्रसाद का काव्य	95
इन्द्रसिंह वरकड़े	
10. हमारे समय में कबीर की प्रासंगिकता	102
राजकुमार अहिरवार	

पराजित होते सम्बन्ध और हिन्दी उपन्यास

डॉ. हिमांशु कुमार

सम्बन्ध ही समाज का आधार है और समाज की अवधारणा मनुष्य के प्रादुर्भाव के साथ मानी जाती है। व्यक्ति इसी समाज की महत्वपूर्ण इकाई है। वह परिवार के सदस्य के रूप में होता है और अपने विकास के साथ-साथ समाज के अन्य महत्वपूर्ण समूहों, संस्थाओं से अपने को सम्बन्धित रखता है। भारतीय संस्कृति के केन्द्र में परिवार की मुख्य भूमिका रही है और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना उसकी सर्वप्रमुख विशेषता है। आज भूमण्डलीकरण और वैश्वीकरण के युग में जैसे-जैसे वैज्ञानिक प्रगति हो रही है और नित्य नये प्रयोग हो रहे हैं, वैसे-वैसे सम्बन्धों में भी प्रयोग होने लगे हैं। सम्बन्धों का विघटन हो रहा है और मानवमूल्य बदलते जा रहे हैं। नैतिकता की भावना का ह्रास हो रहा है। अर्थ प्रधान युग के साये में लोग जी रहे हैं। अर्थ का महत्व मनुष्य से अधिक आंका जाने लगा है। इस यांत्रिक युग में मानव भी 'यन्त्र' बनकर रह गया है। भावनाओं और यन्त्र का दूर-दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं होता है। सम्बन्धों की जटिलता से समाज अनुप्राणित हो रहा है। सम्बन्धों का आधार भावना होती है, जो सिरे से नदारत है। भावनात्मक लगाव से ही एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से जुड़ा होता है, पर आज स्थिति इसके उलट है।

पूँजीवाद के कारण समाज में वर्ग वैषम्य की खाँई और गहरी होती जा रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात किसानों और आर्थिक रूप से निम्नवर्ग की स्थिति में पर्याप्त सुधार नहीं हो पाया है। अमीर निरन्तर अमीर होते जा रहे हैं तथा गरीब निरन्तर गरीब। फलस्वरूप असंतोष की